भजन

तर्ज– बीते हुए लम्हों की कसक

मेरी प्यारी रूहो, रब्द न करो,
न देखो यह लीला,जिद्द न करो–2
तिलस्म के खेल में तुम मदहोश रहोगी
सुध घर की न रहेगी बेहोश रहोगी

1– झूठी जिमी का तुमको इतना लगेगा स्वाद
भूलोगी अपने अर्श को हक भी रहें न याद
नासूत के जहां में फरामोश रहोगी
2– समझाईयां समझे नहीं मानें नहीं फुरमान
तुम कौन हो हम कौन हैं कैसी अपनी पेहेचान
हादी के सुकन सुन कर खामोश रहोगी
3– तहकीक जान छ्ल को फिर भी न छोड़ोगी
बेशक ईलम को लेके भी मन को न मोड़ोगी
दुनियां के देवतों का जयघोष करोगी
4– लगी खंत खरी खेल की सुरता फिराओ तुम
पर कौल याद रखना अलस्तो बे रब कुंम
सादक रहेगा इश्क तो निर्दोष रहोगी